किशन तिवारी

उसको भी तो पढ़ कर देखो

कहता क्या है शायर देखो

हरदम रहते प्रथम आप ही
पीछे कभी पलट कर देखो।

रख कर पाँव चढ़े काँधे पर
इस ज़मीन पर चलकर देखो

सुविधाएँ सरकारी लूटीं
बस्ती बस्ती जाकर देखो

घर कैसे चलता है पूछो
बाहर कभी निकल कर देखो

पीछे हरदम रहा "किशन " ही
आप ज़रा सा मुड कर देखो

अब ज़रूरी है इसे भी सोचिए

जातिवादी रूढ़ियों को तोड़िए

दास्तानों को मिटाएँ ज़ुल्म की
जो हज़ारों साल तक हम पर हुए

जब प्रगति की राह हम चलने लगे
लोग सब जुड़ जाएँगे टूटे हुए

बाँटने में जो लगे हैं मुल्क को
साज़िशें इनकी हैं कुर्सी के लिए

कैसे पहुँचें आख़िरी घर तक ख़ुशी
इस तराज़ू पर सभी को तोलिये

याद करना अब ज़रूरी है उन्हें
जंग से लौटे न जो घर के लिए

समझ गया हूँ तुम क्या हो

छोड़ो अब जाने भी दो

दुनिया मानेगी इक दिन
सच को सच कहने तो दो

बचपन से ही ग़लत पढ़ा
आँखों को खुल जाने दो

हिंसा और अहिंसा का
फ़र्क़ ज़रा समझाओ तो

चर्चा यही आजकल है
घर बैठो चुपचाप रहो

पीड़ा सबकी एक रही

अलग अलग हमने समझी

सब कितने बेचैन यहाँ
अपनी अपनी मगर पड़ी

मिलकर नहर बनाओ तो
मिट पाएगी प्यास तभी

आग लगी हर ओर मगर
बिन पानी चर्चाएँ सभी

हर दिन जीता झूठ यहाँ
सच की जब आवाज़ दबी

धरती से जुड़ पाए नहीं
बातें करते बड़ी बड़ी

भोपाल

 ISSN:2583-8849